आपातकाल
में
सृजन फुलवारी

प्रदीप सोनी 'शून्य'

अन्तरा-शब्दशक्ति
प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

प्रदीप सोनी 'शून्य

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-138-1
संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159
मोबाईल- 9424765259
ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाईट- www.antrashabdshakti
प्रथम संस्करण- 2020 **प्रदीप सोनी 'शून्य**
मूल्य- 50.00 रूपये
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी
THE BOOK WRITTEN BY PRADEEP SONI 'SHUNY'
वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	आराधना	6
2.	मौसमी	7
3.	संस्कृति	8
4.	मैं हुई परिचिता	9
5.	खनके रजनी के कंगन	10
6.	उजली नेह किरण	11
7.	मैं कौन हूँ	12
8.	सिरमौर	13
9.	विश्वास की महक	14
10.	आह का एक छंद	15
11.	हम सह जाते	16
12.	श्रम की ज्वाला	17
13.	रीत	18
14.	वसंत की बहार	19
15.	कंचन मन	20
16.	परिवर्तन	21

आराधना

ममतामयी, ज्ञानमयी
कला पुंज, विज्ञान पुंज
माँ सरस्वती, शारदा,
आराधना करुं तेरी सदा।

अधरों पर रहें वचन
गीत बन कर मधुर मधुर।
लालसा न हो अतिरेक,
धैर्य भाव हो प्रचुर प्रचुर।
तेरा आशीष बना रहे,
न आए कोई भी आपदा।

परस्पर सद्भावना की
ज्योति हृदय में जलती रहे।
वरदान दे माँ, तरुणाई को,
राष्ट्र हित में ढलती रहे।
अक्षुण्ण बनी रहे माँ,
स्वर्णिम एकता की संपदा।

रंग से अपनत्व के सब,
चित्र मानवता के सजें।
समन्वय साहचर्य के हित,
वाद्य सारे मिलकर बजें।
गीत गाए शांति के माँ,
धरा पर वाणी प्रियंवदा।

मौसमी

चाँद तारों की छत से,
हिम हवाओं के समर्थन से।
धीरे धीरे,
नन्हे-नन्हे कदमों से,
उतर रही शीतलता।

ताली बजाते रंगबिरंगे,
ऊष्मीय परिधान।
धूप सेंकने आतुर हैं,
बच्चे बूढ़े और जवान।
ठोस ठोस लगने लगी, कामकाजी तरलता।

बढ़ रही है दिवस की
निर्मलता दिन दूनी।
मुन्ना राजा पहने,
फुदनेदार टोपी ऊनी।
सर्द शीत ने रोक दी है, मौसमी चपलता।

तन झिझकता सा है,
जल को स्पर्श करने।
मन प्रतीक्षित है सदा,
मनोहर दर्श करने।
सिसक रही हैं सुस्तियाँ, मुस्काई सरलता।

संस्कृति

खिल रहे हैं फूल, खिलने दो।
गले मिल रहे लोग, मिलने दो।
न गिरें घरौंदे, उम्मीदों के।
हवाओं से सविनय अनुरोध है।

हृदय द्वार बँधे वंदनवार हैं।
मौसम के हौसले ख़ुशगवार हैं।
भ्रान्ति से न उपलब्ध कुछ,
शांति का स्तुत्य यह शोध है।

व्यक्ति-व्यक्ति हेतु सामान्य हो।
राष्ट्र बलिदान हेतु, जो धन्य हो।
लोक हित में जो न रहे,
वह तो निंदनीय क्रोध है।

मानवता हित जो शीर्ष है।
दानवता हेतु वही दधीचि है।
हृदय हीन है वह चरित्र।
जिसे संस्कृति से विरोध है।

मैं हुई परिचिता

जिस दिव्यता से,
मिली मुझे भव्यता।
उस रूप से अब
मैं हुई परिचिता।

न कोई तम यहाँ
न कोई भ्रान्ति।
मन नीलगगन में
छिटकती शांति।
धड़कन आँगन में
नाच रही निजता।

निःशब्द होकर भी
सब हुआ व्यक्त।
स्वयं हुआ जाता,
अपने पर आसक्त।
दर्शन हुआ अंतः में,
खिल उठी स्मिता।

खनके रजनी के कंगन

सूरज के जाते ही,
अभिसार की बात बनी।
तारों जड़ी ओढ़नी ओढ़े,
आ गई मिलने रजनी।
चंद्रमा बाँहें फैलाये है,
करने को आलिंगन।

बेला ख़ुशबू में भीगे,
श्यामल श्यामल कुंतल।
राग रसवंती गा रही,
पाँव बँधी पवनी पायल।
आगमन हुआ सजनी का,
महक उठा है चन्दन।

साँसों में घुली चाँदनी,
नयनों में बिम्ब प्यार के।
अधर धरा के मौन हुए,
दिखे इशारे बहार के।
झर झर निर्झर धार में,
खनके रजनी के कंगन।

उजली नेह किरण

स्पर्श कर गई जो,
उजली नेह किरण।
महक गए मन बगिया के,
सभी सुमन।

आकर तुमने मेरे,
सपनों का शृंगार किया।
अपनी धड़कन में,
रहने का अधिकार दिया।
पाकर बिम्ब तुम्हारे
खिल उठे दर्पण।

शाम सुहानी ले आई,
मुस्कानों की मनुहार।
और साथ में चितवन के,
मन मोहक उपहार।
महक तुम्हारी पा कर,
धन्य हुए वातायन।

प्रणय प्रहर की ओर,
तक़दीर चली है।
मिलन अनुभूति की,
पीर भली है।
पावनता से सज गए,
मन के बंधन।

मैं कौन हूँ

मैं कौन हूँ
किसको ढूंढता,
प्रश्न कर रहा ख़ुद
चित्त पर छायी छबि कोई ऐसी
भूल गया सुध।

हवाओं में जैसे घुल रही है,
परिचित सुगंध।
गीत उसी के गा रहे सब,
जैसे खग वृन्द।
विदीर्ण कर रहे
अनुभूतियों के प्रखर आयुध।

प्रत्यक्ष आईने के मैं हूँ स्वयं,
पर प्रतिबिम्ब में नहीं।
दिख रहा कोई
जो अब मेरे सानिध्य में ही नहीं।
कौन हृदय मेरे कर रहा अधिकार,
होकर मुग्ध।

है सत्य यह कि
दो हो गए हैं हृदय एक।
इस तरह होना श्याम का,
न कोई व्यतिरेक।
यह बसंत है या शरद प्रिय, कब कौन रुत।

सिरमौर

भले ही तुम बने रहो
सिरमौर।
दो पल खुशियों के
उनकी देहरी, पर भी ठहरें।

दो बातें अपने मन की
अधर उनके, भी कह लें।
आँगन में उनके भी,
होने दो भोर।

अनपढ़ हैं, गिनती क्या जाने,
क्या जाने छप्पन भोग।
भूखी प्यासी दिनचर्या है,
झूम रहे हैं, रेतीले रोग।

उदर तुम्हारा तृप्त रहे,
उनको भी दो कौर।
पहर-पहर तुम बदलो
रंगीन रेशमी परिधान।

उनके भी तन को हो जाए,
कुछ चिथड़ों का प्रावधान।
भले रहो तुम महलों में,
उनका भी कोई ठौर।

विश्वास की महक

महकने लगेगी,
तेरे विश्वास की महक।

रोशनी के बनेंगे,
फिर से अपने किले।
गलेंगे धूप में फिर,
मोम से बने गिले।
दहकने लगेगी,
तेरे सृजन की दहक।

सुलह के गीत गूंजेंगे,
द्वार पर तुम्हारे।
फिर चमकेंगे नभ में,
सद्भाव के सितारे।
चहकने लगेगी,
वही एकता की चहक।

समाधान के फिर,
झर झर, झरने बहेंगे।
मंज़िल हमारी है,
रास्ते खुद कहने लगेंगे।
लहकने लगेगी,
खेत में हरियाली लहक।

आह का एक छंद

मन गया
देह रीती।
दिन गया
रात बीती।
आह का एक छंद,
फिर रचा।

कहीं गर्त
कहीं शृंग सा।
जीवन अतीत
पतंग सा।
ढील मिली, तो उड़ गए।
खींच लिया तो गिर गए।
तेज़ धार से बचे
तो कुछ बचा।

रोप दिया
उग गए।
हुए दाने, तो चुग गए।
जहाँ हवा
वहीं बहे,
कटुता को कौन कहे।
जैसे बजे बाजे यहाँ
वैसा नचा।

हम सह जाते

रिसते घाव पर
न मरहम लगाते,
हम सह जाते।
पर ज़हर बुझे
तानों की पीड़ा, साल रही है।

न्याय नीति के द्वारे
संबंधों के ताले हैं।
अन्न उगाने वाले को,
रोटियों के लाले हैं।
तम में धकियाने का,
असफलता को
श्रेय नहीं,
ईर्ष्यालु उजियारों की, चाल रही है।

सजे धजे गमलों में,
काँटों की पौध लगी है।
साफ स्वच्छ कुटीर में,
दीमक की सेंध लगी है।
विधान नहीं हुआ है,
कभी पराजित।
क्रूर जनों में,
अपवादों की, ढाल रही है।

श्रम की ज्वाला

तोड़-तोड़ पत्थर,
सड़कों पर।
जोड़ता दिल से,
सबको घर पर।
वह मेरा साजन आने वाला है।

श्रम कर-कर,
थक-थक कर,
जो घर आएगा।
जीवन मीत मेरा
रूखी-सूखी रोटी
प्रेम से खायेगा।
वह मधुर मधुर पल आने वाला है।

यह नहीं चूल्हा,
उसकी श्रम की,
यह ज्वाला है।
मेरी साँसों में
हरदम यही तो,
एक निकटता है।
मेरी खुशियों का लबालब प्याला है।

रीत

मौसम जब भी चाहत के आएँ।
बिन प्रतीक्षा के दर्शन हो जाएँ।
मिल कर गीत गाएँ प्रीत के,
आओ हम ऐसी रीत बनाएँ।

हो प्रणय पलों का शुभ सृजन।
परस्पर मुस्कानों का संयोजन।
कल्पनायें मिलकर आशाओं से,
करें भावनाओं का आयोजन।
विश्वास की देहरी पर सदा,
प्रीत के पावन दीपक जलाएँ।
आओ हम ऐसी रीत बनाएँ।

हर सूर्य किरण में दिखे सजन।
सुमन गंध बहे प्रेम की पवन।
धूप गुनगुनाए मन की वार्ताएँ,
दिशा दिशा आस के हों चमन।
धड़कनें मिलन के रंग लेकर,
इंद्रधनुषी रंगोलियाँ सजाएँ।
आओ हम ऐसी रीत बनाएँ।

वसंत की बहार

तुम्हारा यदि संग है।
तो खिलता हर रंग है।
तुम्हारी मुस्कान पर,
न्यौछावर उमंग है।

तुम हँसो, सुमन हँसे।
तुम सजो, चमन सजे।
लहराए केश तुमने,
लहर लहर पवन चले।
देख देख नयन कमल
चकोर भी दंग है।

अधर खुले, बजे गीत।
मन मिले, मिले मीत।
चाहतों के सुर मिले,
चहक उठी प्रिय प्रीत।
वसंत की बहार है,
हर तरफ अनंग है।

कंचन मन

कंचन काया में कंचन मन हो, अहा अहा।
याद आने का कोई जतन हो, अहा अहा।

साँसों की सरगम पर कोई गाए।
कल्पनाओं पर चल कर कोई आए।
हृदय बेल पर हों अर्पण के पंछी।
चितवन नित नए नए खेल दिखाए।
अपने प्रीतम का आराधन हो, अहा अहा।
कंचन काया में कंचन मन हो, अहा अहा।

नेह गगन में बादल बन कर छाओ।
प्रेम नीर में प्रतिबिंबित हो जाओ।
रात्रि में पल पल रहो संग स्वप्न में,
सुबह रवि रश्मि के संग फिर आओ।
नयनों में चाहत का अंजन हो, अहा अहा।
कंचन काया में कंचन मन हो, अहा अहा।

प्रतीक्षा हो दूर दूर संयोग उदय हो।
धड़कन धड़कन में सदा विलय हो।
निर्मल जल सा बहे भाव हृदय का,
मधुर मधुर शब्दों का मधुराशय हो।
प्रेम प्रस्ताव का अनुमोदन हो, अहा अहा।
कंचन काया में कंचन मन हो, अहा अहा।

परिवर्तन

दिख रहा जो परिवर्तन है।
प्रकृति का ही तो नर्तन है।

खिलते गंधित नित्य सुमन,
वसुंधरा का पूजन अर्चन है।

झंझावत तूफ़ान तड़ित सब,
दुष्कर्मों के प्रति गर्जन है।

धूप छाँव ये कल कल जल,
कण कण जीवन दर्शन है।

'शून्य' धरती माँ है जहाँ है,
त्याग तपस्या का दर्पण है।

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

जीवन ईश्वर की अनुपम देन है। जीवन में विविधता और नवीनता मनुष्य को जीवन जीने की प्रेरणा देती है। प्रकृति का सानिध्य उसे सृजन करने उत्साहित करता है। रचनात्मकता की विशाल पूँजी प्रकृति से ही हमने प्राप्त की है। साहित्य, कला, संगीत, अभिनय और अनेक शिल्प जहाँ एक और जीवनचर्या को सौन्दर्य प्रदान करते हैं; वहीं दूसरी और परस्पर संबंधों को प्रवणता भी प्रदान करते हैं। ये सभी कला विधान रचनात्मकता के अंग ही हैं। मानव जीवन की अनिवार्यताओं को पूरा करते करते जो थकान का जो बोझ मनुष्य अनुभूत करता है उसे मनोविनोद ही हल्का कर ताजगी भरता है। पुराने राज दरबारों, सभाओं में और वर्तमान नाट्य मंचों, चलचित्र घरों और अन्य मंचों पर यही मनोविनोद अपना कर्तव्य निभाता है।

जब कभी परिस्थितियां विषम होती हैं। वियोग अपनों को जब अपने अधिकार में लेकर एकल कर देता है। आपदा के अतिथि बन जाने पर जीवन हेय हो जाता है; तब रचनाशीलता संगनी बन कर अधूरापन दूर कर देता है। कभी कभी विफलताएं भी सृजन शील बना देती हैं। बड़े बड़े महाकाव्य आपदाओं में सकारात्मक ऊर्जा की देंन है। शिव का तांडव क्रोध की शांत करने का ही उद्यम रहा होगा। कलाकार, रचनात्मकता का प्रहरी भी होता है और शून्यता का सहचर भी। अकेलेपन को एक चित्रकार अपनी अनुभूति को अपनी तूलिका से रंग भरकर अमर कर देता है। साहित्यकार अपने एकाकीपन को अभिव्यक्ति की सुंदरता प्रदान कर देता है। एक एक शब्द मोती की माला बनकर अर्थो का वसंत जगा देता है। पुस्तकों में कवि, साहित्यकार की कृतियाँ पृष्ठों से निकल निकल कर व्यग्र होती हैं। कोई एकाकी आये और उसे छुए।

रचनात्मकता जीवन के उदास क्षणों को रसमय बना देती है। रचना में बसने के लिए उसमें समर्पण और मन चाहिए।

आप रचनाशीलता को अभिन्न बनाए रखेंगे तो वह भी कभी, किसी समय भी आपको अकेला नहीं छोड़ेगी।

रचनाकार
प्रदीप सोनी 'शून्य'
E-mail - shoonya1959@gmail.com
Mobile - 9981497642

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला – बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क – 9424765259, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com
978-93-5372-138-1
मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स
Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/